पहाड़ी कोरवा

एक विशेष पिछड़ी जनजाति

आदिमजाति अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, नवा रायपुर, छत्तीसगढ़

2020

प्राक्कथन

भारत सरकार द्वारा अनुसूचित जनजातियों में से कुछ निश्चित जनजातीय समुदायों को विशिष्ट मापदण्डों यथा **स्थिर या कम होती जनसंख्या, न्यून साक्षरता दर, कृषि की आदिम तकनीक एवं आर्थिक पिछड़ेपन** के आधार पर देश में 75 जनजातीय समुदायो को विशेष पिछड़ी जनजाति (Particularly Vulnerable Tribal Groups) घोषित किया गया है। जिसमें से पहाड़ी कोरवा छत्तीसगढ़ राज्य की 05 विशेष पिछड़ी जनजातियों में से एक प्रमुख जनजाति है।

पहाड़ी कोरवा जनजाति छत्तीसगढ़ राज्य के बलरामपुर, जशपुर, सरगुजा एवं कोरबा जिले में प्रमुखता से निवासरत है। यह कोरवा अनुसूचित जनजाति की एक शाखा है। इनमें हसदवार, एदेगवार, मुढियार, सामरवार आदि गोत्र पाये जाते है। इनके द्वारा कोरवी बोली मे परस्पर संवाद किया जाता है।

पहाड़ी कोरवा जनजाति की अर्थ व्यवस्था मुख्यतः परम्परागत रूप से बांस–बर्तन बनाने, चटाई निर्माण के साथ–साथ वनोपज संकलन, पशुपालन, मजदूरी आदि पर आधारित है। इनके प्रमुख देवी–देवता बुढ़ादेव, कामदेवी, शिकार देवी, महामाई देवी, ज्वालामुखी देवी आदि है। बीजबोहानी, छेरतापरब, पितर आदि प्रमुख त्यौहार है।

शासन द्वारा इनके समग्र विकास हेतु पहाड़ी कोरवा विकास अभिकरण एवं प्रकोष्ठ गठित कर विभिन्न विकासमूलक योजनाएं संचालित की जा रही है।

छत्तीसगढ़ की अनुसूचित जनजातियों के **''छायांकित अभिलेखीकरण श्रृंखला''** के अन्तर्गत आदिमजाति अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान द्वारा **पहाड़ी कोरवा जनजाति के जीवनशैली पर आधारित फोटो हैण्डबुक** प्रकाशित की गई है। हम आशा करते है कि, संस्थान के संचालक के मार्गदर्शन में अनुसंधान दल द्वारा तैयार की गई इस पुस्तिका में दर्शित तथ्य राज्य के संबंधित जनजाति समुदाय एवं जनजातीय संस्कृति में रूचि रखने वाले लोगों के लिए लाभप्रद एवं उपयोगी होगी।

शम्मी आबिदी IAS
संचालक
आदिमजाति अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान,
नवा रायपुर, छत्तीसगढ़

डी.डी.सिंह IAS
सचिव
छत्तीसगढ़ शासन
आदिम जाति तथा अनुसूचित जाति विकास विभाग

पहाड़ी कोरवा

एक विशेष पिछड़ी जनजाति

मार्गदर्शन – शम्मी आबिदी, संचालक

– डी.पी.नागेश, उप संचालक

प्रस्तुतिकरण – श्रीकांत कसेर

सहयोग – गिरधारी लाल बलेन्दर

आदिमजाति अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, नवा रायपुर, छत्तीसगढ़

परिचय

भारतीय संविधान में अनुसूचित जनजातियों को विशेष दर्जा प्रदान करता है। परम्परागत रूप से आदिवासी, वनवासी जनजातियों के रूप में जाना जाता है। जो मुख्यधारा से काफ़ी अलग–अलग है। वे आर्थिक, सामाजिक एवं शैक्षणिक रूप से पिछड़ी हुई है। कोरवा जनजाति के एक उप समूह पहाड़ी कोरवा को पांचवी पंचवर्षीय योजना के दौरान उनकी आदिम कृषि तकनीक, न्यून साक्षरता दर एवं स्थिर जनसंख्या के आधार पर विशेष पिछड़ी जनजाति (PVTG) के रूप में पहचाना गया था। पहाड़ी कोरवा परिवार जनजाति मानवशास्त्रीय वर्णन में ऑस्ट्रो–एशियाटिक परिवार से संबंधित है वे मध्यम कद काठी, गठीले शरीर व गहरी भुरी व काली त्वचा लिये होते है। इनकी बोली–कोरवी है। ये परस्पर संवाद हेतु कोरवी बोली के साथ साथ सादरी एवं

सरगुजिहा बोली का उपयोग करते है।

पहाड़ी कोरवा छत्तीसगढ़ राज्य के सरगुजा, बलरामपुर, जशपुर एवं कोरबा के पहाड़ियों, घाटियों और जंगलों में निवास करते है। जिनकी कुल जनसंख्या 44026 है। उक्त जनसंख्या में पुरूष जनसंख्या 22196 एवं स्त्री जनसंख्या 21830 है। इनमे स्त्री –पुरूष लिंगानुपात 984 है।

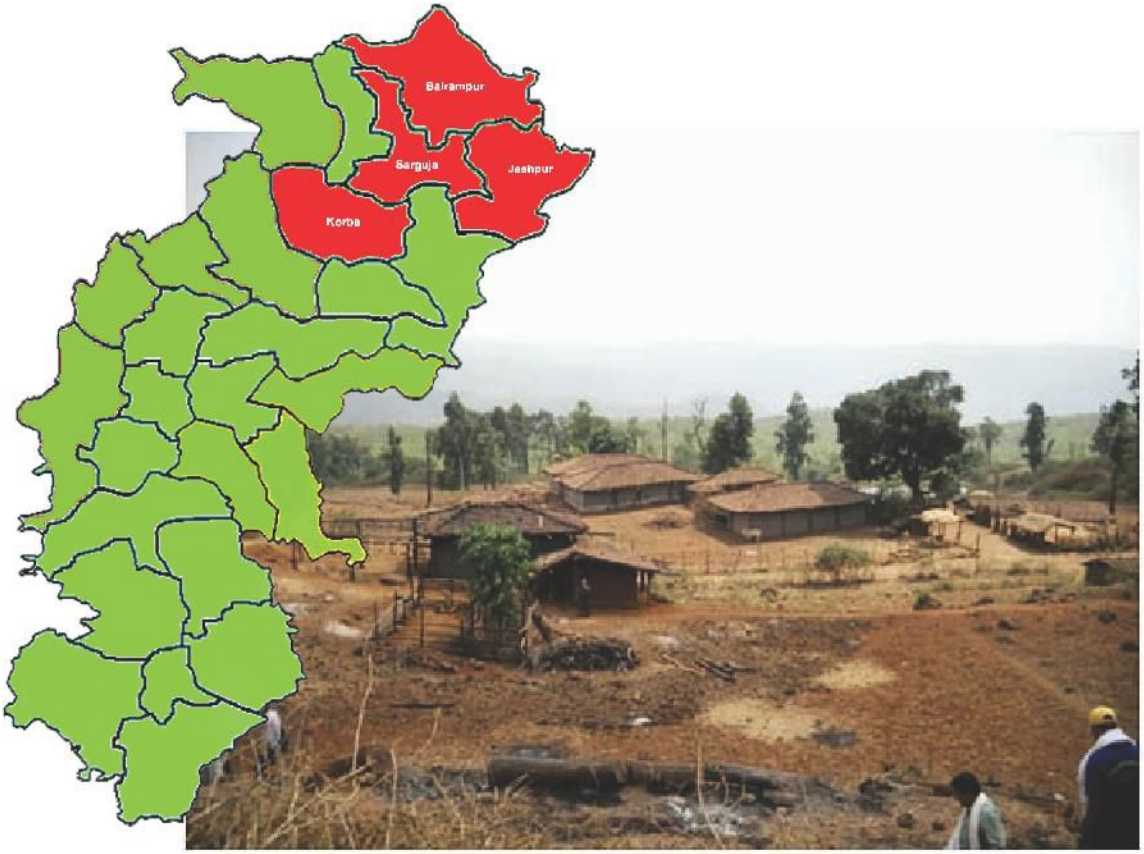

उत्पत्ति एवं निवास

कोरवा जनजाति की उत्पत्ति के संबंध में ऐतिहासिक प्रमाण उपलब्ध नहीं है किन्तु कालोनिल डॉल्टन ने इन्हें **कोलारियन समूह** से निकली जाति माना है। किवदंतियों के आधार पर अपनी उत्पत्ति राम–सीता से मानते है। वनवास काल में राम–सीता व लक्ष्मण धान के एक खेत से गुजर रहे थे। पशु पक्षियों से फसल की सुरक्षा हेतु आदमकद पुतले को धनुष–वाण पकड़ाकर खेत के मेढ़ में खड़ा कर दिया था। सीता जी के मन में कौतुहल

सुझी। उन्होंने राम से उस पुतले में जीवन प्रदान करने को कहा। राम ने पुतले को मनुष्य रूप दिया। यही पुतला कोरवा जनजाति का पूर्वज था।

पहाड़ी कोरवा ग्राम आमतौर पर पहाड़ी के ऊपर या जंगल से पास होती है। वे लोग बार–बार आवास बदलते हैं। ये

लोग अन्य जनजातियों से भी अलग–अलग निवास करते हैं। इनकी बसाहट विरल होती है।

एक पहाड़ी का घर किसी पहाड़ी के उपर होगा तो दूसरे का कहीं दूर घने जंगलों में होगा, तीसरे का किसी कदंरा में होगा तो चौथे का किसी ढलान पर। इन घरो को सम्पर्क करने हेतु कोई मार्ग नहीं होता है। पहाड़ी कोरवा घर बनाने के लिए जगह चुनने के पूर्व यह देखता है कि वह कितना शुभ है जिसके लिए भूमि पर एक छोटा गड्ढा बनाकर उसके चक्कर लगाते हुए अपने हाथों में अनाज के दानों को भरकर पूर्व की ओर सिर कर गड्ढे में चांवल फेकता है। अगर चांवल गड्ढे के भीतर गिरता है तो उस जमीन में कुल्हाड़ी मारी जाती है। उसका जमीन में गडना घर बनाने हेतु शुभ माना जाता है।

भौतिक संस्कृति

पहाड़ी कोरवा का घर सामान्यतः एक कमरा के रुप में बना होता है। इसी कमरे में रसोई व शयन कक्ष तथा चुल्हा व खाने पीने का बर्तन रहता है। एक कोने मे आनाज रखने की कोठी होती है। घर की दीवाल कच्ची मिट्टी व सीधी–सीधी लकड़ियों को गाड़ कर तथा छत भी लकड़ियों से तैयार किया जाता है। जिसमें ऊपर घास–फूस डला रहता है। कुछ पहाड़ी कोरवों का छत खपरैल युक्त होता है। घर की छबाई (प्लास्टर) मिट्टी तथा लिपाई–पुताई गोबर या स्थानीय मिट्टी से करते है।

उनके पास दैनिक उपयोग की सीमित वस्तुएं उपलब्ध रहती है। उनके द्वारा भोजन पकाने के लिये मिट्टी तथा एल्युमिनियम के बर्तन, डेकची, कड़ाही व चम्मच, करछुल, पानी पीने हेतु गिलास आदि तथा खाना खाने के लिए दोना पत्तल का उपयोग करते हैं। चुल्हा मिट्टी से बनाये जाते है। लकड़ी जलाकर या चिमनी का उपयोग कर प्रकाश की व्यवस्था की जाती है।

पहाड़ी कोरवा जनजाति के लोग पूर्व बेवर कृषि करते थे वर्तमान में भी ये कृषि के आधुनिक तरीकों का उपयोग नहीं करते है। खेती के लिए ढालु स्थान साफकर बीज का छिड़काव कर देते है पहाड़ी कोरवा एक स्थान पर रहना पसंद नही करते आवास लगातार बदला रहता है। वर्तमान में अधिकांश पहाड़ी कोरवा परिवार को वनभूमि पर बेजा व कुछ लोगों को शासन द्वारा भूमि पट्टे पर प्रदान की गई है। कृषि में धान कुटकी, कोदो, मक्का, उड़द आदि अनाज उगाते है। सब्जियों में कुम्हड़ा, खीरा आदि उगाते है। कृषि औजार के रूप में हसियां, गैती, फावड़ा, सब्बल, कुल्हाड़ी, सिका कांवर, हल आदि कृषि उपकरणों का प्रयोग करते है।

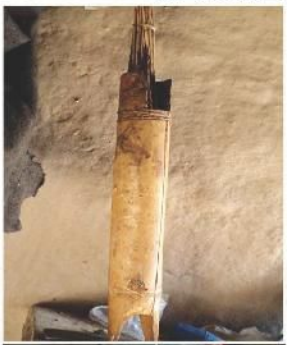

प्राचीन समय में पहाड़ी कोरवा जंगली जानवर जैसे – हिरण, सुअर, खरगोश, गिलहरी, चिड़िया आदि का शिकार करते थे, शिकार के लिए प्रमुख औजार तीर धनुष, फरसा, भाला व कुल्हाड़ी का प्रयोग करते है। मत्स्याखेत

पूर्व में तीर धनुष का उपयोग करते थे। वर्तमान में जाल, मच्छरदानी के टुकड़े, चोरईया, बंशी से मछली व शिकार करते है। पहाड़ी कोरवा व्यक्तिगत एवं सामुहिक रूप से छोटे जीव–जन्तुओ का शिकार मनोरंजन की दृष्टि से करते है। वहीं बड़े जीव–जन्तुओं का शिकार सांकेतिक रूप से परम्परागत रूप से विशिष्ट अवसरों में करते है।

पहाड़ी कोरवा पुरूष लंगोट, धोती, कुर्ता, गमछा, लुंगी एवं महिलाए घुटने से नीचे तक **लुगड़ा** (साड़ी) पहनती है। पहाड़ी कोरवा महिला एवं पुरूष ज्यादा साज श्रृंगार नहीं करते है। महिलाएं श्रृंगार के रूप में सूरज, चांद, सांप, बिच्छु, वृक्ष, फल–फूल आकृति के गोदना बाह, कलाई, पैर, गर्दन से नीचे गुदवाती है। नाक व कान में लकड़ी के टुकड़े या गिलट के गहने पहनती है। बाल में तेल लगाकर कंघी करती हैं। पहाड़ी कोरवा महिलाओं द्वारा शरीर के विभिन्न हिस्सों में पहने जाने वाले आभूषणों में **तरकी, तरका (कर्णफूल), हसली, कंखता (कंगन), पछवा (बिछिया), चुड़िया, करधनी** प्रमुख है ।

आर्थिक जीवन

पहाड़ी कोरवा की अर्थ व्यवस्था वनों पर आधारित अर्थव्यवस्था है वनोपज संग्रहण में महुवा, तेन्दुपत्ता, साल पत्ता एवं बीज, कोसा, जड़ी बुटी, चार–चिरौंजी, शहद एवं लाख, हर्रा, बेहड़ा आदि का संग्रहण करते है। महुवा का उपयोग शराब बनाने व बेचने के लिये करते है, अन्य वनोपज की विक्रय स्थानीय बाजारों में करते है।

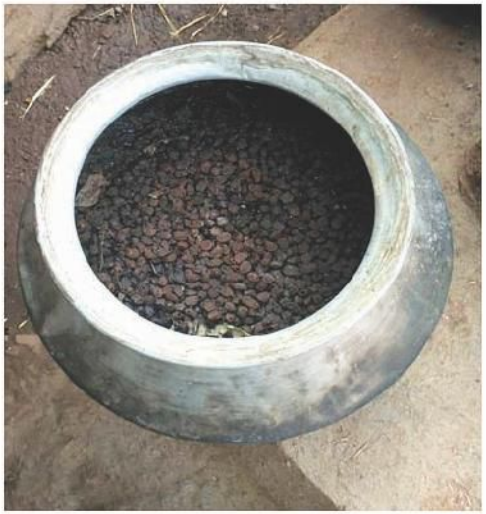

पहाड़ी कोरवा प्राचीन समय में बेवर कृषि करते थे अर्थात जंगल में आग लगाकर जमीन साफकरते थे तथा बरसात के समय बीज छिड़क देते थे। उसके निदाई गुडाई आदि कार्य नहीं करते थे। जिसके कारण फसल की पैदावार बहुत ही कम होती थी।

पहाड़ी कोरवा स्त्री–पुरूष दैनिक मजदूरी हेतु ग्राम के अन्य जनजातियों के यहां कार्य करते है। ये मुख्यत: कृषि– मजदूरी एवं गड्ढे खोदने हेतु मजदूरी का कार्य करते हैं। वर्तमान में इनके द्वारा बांस बर्तन निर्माण, छिंद पत्ते से चटाई निर्माण, मोहलाइन झाल से रस्सी निर्माण, दोना पत्तल निर्माण तथा जंगली घास से झाड़ू बनाने के साथ साथ अन्य शासकीय योजनाओं की मजदूरी में संलग्नता दिखाई देती है। इनके द्वारा मुर्गी एवं बकरी आदि का पालन किया जाता है।

जीवन चक्र

शिशु जन्म को भगवान की देन मानते है। प्रसव के लिये पत्तों से निर्मित अलग झोंपड़ी बनाते है। जिसे **''कुम्बा''** कहते है। प्रसव इसी झोपड़ी में स्थानीय दाई जिसे **''दगरिन''** कहते है, की सहायता से कराते हैं। बच्चें की नाल तीर के नोंक या चाकू से काटते है। नाल झोपड़ी में ही गड़ाते है। प्रसूता को हल्दी मिला भात खिलाते है। कुल्थी, एढ़ीमुड़ी, छिंद की जड़, सरई छाल, सोंठ–गुड से निर्मित काढ़ा भी पिलाते है। छढे दिन छठी मनाते हैं, शिशु तथा माता को नहलाकर सूरज सरती व कुल देवी को प्रणाम करते है। महुवा से निर्मित शराब रिश्तेदारों व मित्रों को पिलाते है।

इनमें लड़कियों के प्रथम मासिकधर्म आने के पश्चात इन्हें विवाह योग्य माना जाता है,वहीं लड़कों के दाढ़ी मुछ आने को विवाह की उम्र माना जाता है। विवाह का प्रस्ताव वर पक्ष की ओर से होता है। विवाह में अनाज, दाल, तेल, गुड़ 40 रूपये वधु के पिता को **''सुक''** के रूप में दिया जाता है। विवाह मंगनी, सूत, बधौनी विवाह और गौना इस प्रकार चार चरण में पूरा होता है। विवाह के 2–3 वर्ष बाद गौना होता है। फेरा करने का कार्य जाति का मुखिया सम्पन्न कराता है। इसमें **गुरावट (विनिमय) लमसेना (सेवा विवहा) पैढू (घुसपैठ) उढ़रिया (सहपलायन)** आदि भी पाया जाता है। विधवा पुनर्विवाह, देवर–भाभी का पुनर्विवाह भी मान्य है।

इनमें किसी सदस्य की मृत्यु होने पर मृतक को दफनाते हैं। 10वें दिन स्नान कर देवी देवता एवं पूर्वजों की पूजा करते है। मृत्यु भोज देते है। जिस झोपड़ी में मृत्यु हुई थी उसे नष्ट कर नई झोंपड़ी बनाकर परिवार रहता है।

राजनैतिक जीवन

पहाड़ी कोरवा की अपनी जाति पंचायत है। जिसका मुख्य कार्य परम्परागत सामाजिक प्रथाओं का पालन करवाना है। ये सामाजिक प्रथाएं पीढ़ी–दर–पीढ़ी चलती रहती है, और इन प्रथाओं को जन–मत प्राप्त होने के कारण कोई भी इसे तोड़ने का हिम्मत नहीं करता क्योंकि वे जानते हैं कि इसे तोड़ने से समाज द्वारा अर्थात जाति पंचायत द्वारा उन्हें दंडित किया जाएगा। सामाजिक दंड का डर उनके व्यवहार को नियंत्रण में रखता है। यही कारण है कि पहाड़ी कोरवा आज अन्य समाज की भांति सामाजिक रूप से अनुशासित है। इनमें जाति पंचायत के मुखिया को नायक या प्रधान के नाम से जाना जाता है। इसके अतिरिक्त 2–3 अन्य व्यक्तियों का चयन किया जाता है जो ग्राम में सूचना आदि देने का कार्य करते है। जिसे सेवा कहा जाता है।

यह समाज पितृवंशीय एवं पितृसतात्मक है। सम्पत्ति हस्तांतरण पिता से पुत्रों की ओर समान रूप से होता है।

किसी प्रकरण पर जाति पंचायत के पास न्याय के लिये प्रस्तुत किया जाता है। जाति पंचायत के प्रधान न्याय के लिये पंचायत के बैठक के लिये तिथि व समय निर्धारित करता है। बैठक में जाति के सभी वयस्क पुरूष भाग लेते है, तथा पंचायत में दोनों पक्षकारों को अपना पक्ष प्रस्तुत किया जाता है, दोनों पक्षों को सुनकर प्रधान द्वारा उपस्थित समाजिक सदस्यों से विचार–विमर्श कर जनमत के अनुसार न्याय किया जाता है।

धार्मिक जीवन

पहाड़ी कोरवा लोग अपने परम्परागत धर्म में विश्वास रखते हैं उनका विश्वास है कि उनके निवास स्थान के आप–पास अनेक देवी–देवता एवं जीवात्माएं रहती है जिन्हें यदि प्रसन्न नहीं रखा जाय तो उन्हें नुकसान पहुंच सकता है। इन पारलौकिक शक्ति में विश्वास ही धर्म है। पहाड़ी कोरवाओं की जीववाद में विश्वास है। प्रत्येक घरो में नियत स्थानों में पूर्वजों को स्थान दिया जाता है, तथा

बीज बोने के अवसर पर बीज बोहानी, धान की फसल घर मे आने पर पूस माह में छेरता परब, पूर्वजों को कच्ची उड़द की दाल अर्पित कर पितर त्यौहार आदि मनाये जाते है।

इनके लोकनृत्यों में करम वृक्ष के चारों ओर करमा नृत्य, विवाह के अवसर पर दमकच नृत्य आदि प्रायः पुरूष व महिला सदस्यों द्वारा किया जाता है।

उपरोक्त के अलावा पहाड़ी कोरवा लोग **करमा, बिहाव, परघनी, रहस**, आदि लोकनृत्यो के साथ लोकगीतो का भी गायन करते है। इनके वाद्ययंत्रों में **डंडा, मांदर, डोलक, झांझ–मंजीरा, डोलकी** आदि प्रमुख है।

परिवर्तन एवं विकास

परिवर्तन समय का आपरिहार्य अंग होता है। समय के साथ सभी चीजों में बदलाव आता है। पहाड़ी कोरवा घने जंगलों में निवास करते थे वनों के कटने एवं आवागमन के साधनों में वृद्धि आदि के कारण बाह्य संस्कृति के सम्पर्क में आने लगे है।

पहाड़ी कोरवा के विकास हेतु तथा जीवन स्तर को बड़ाने के लिए एवं इन्हें विकास के मुख्यधारा में जोड़ने के लिए शासन द्वारा पहाड़ी कोरवा विकास अभिकरण का गठन किया गया है।

शासन द्वारा सरगुजा संभाग में पहाड़ी कोरवा विकास अभिकरण अम्बिकापुर व जशपुर के माध्यम से पहाड़ी कोरवाओं हेतु उनके समग्र विकास के दृष्टिकोण से कौशल विकास, शुद्ध पेय जल, प्रधानमंत्री आवास योजना, इंदिरा आवास योजना, कृषि उपकरण व आर्थिक विकास हेतु योजना, वन अधिकार अधिनियम के तहत कृषि एवं आवास हेतु वन भूमि पर स्वामित्व, स्वास्थ्य के दृष्टिगत आंगनबाड़ी व स्वास्थ्य केन्द्रों तथा शैक्षणिक विकास हेतु प्राथमिक शाला एवं पहाड़ी कोरवा आश्रमो की स्थापना के साथ–साथ विभिन्न योजनाओं का संचालन किया जा रहा है। जिनका प्रभाव पहाड़ी कोरवा जनजाति परिवारों में भी परिलक्षित हो रहा है।

छत्तीसगढ़ की जनजातियों के ''छायांकित अभिलेखीकरण श्रृंखला'' क्र. 07 पहाड़ी कोरवा

संचालनालय, आदिमजाति अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान,
सेक्टर–24, अटल नगर, नवा रायपुर, छत्तीसगढ़

Email: trti.cg@nic.in
Ph: 0771-2960530, Fax 0771-2960531